शहादत ग्यारहवें इमाम हसन असकरी (अलै.)

(8 रबीउल अव्वल)

दिया ज़हर इब्ने अली उन नक़ी को
ज़नाबे इमाम हसन असकरी को

रखा क़ैद में मोतमिद ने हमेशा
न सय्यद पर आया तरस उस शक़ी को

दरिन्दों को जिस घर में पाला गया था
बुला कर वहाँ भेजा इब्ने अली को

नमाज़ आपने इस जगह जब अदा की
किए सजदे उन मूंज़ियों ने वली को

निकल आए पढ़कर नमाज़ आप लेकिन
न माना इमामे ज़मन मुत्तक़ी को

रिवायत में तहरीर है मोतमिद ने
दिया शरबते सम वसी ऐ नबी को

जिसे पीते ही ज़हर फैला जसद में
रहा तीन दिन क़र्ब इब्ने अली को

थी वह माह सुय्यम की तारीख़ हशतुम
छिपाया तहे खाक़ हक़ के वली को

था सन दो सौ और साठ हिजरी वह ऐ 'फिक्र'
दिया सबने पुरसा अली और नबी को